पेज 8 से आगे

महिलाएं ही बचा सकती हैं खेती

अलग-अलग परिस्थिति और संस्कृति के अनुरूप किसानों ने बीजों की सुरक्षा के कई तरीके और विधियां विकसित की हैं। मक्का के बीज को घुन और खराब होने से बचाने के लिए चूल्हे के ऊपर छींके पर रखते हैं। और सतपुड़ा अंचल में खुले में मक्के के भुट्टे को खंबे में छिलका समेत उल्टे लटकाकर रखते हैं। छिलका बरसाती का काम करता है और बारिश का पानी भी उन्हें खराब नहीं कर पाता।

मिट्टी की बड़ी कोठियों में, लकड़ी के पटाव पर, मिट्टी की हंडी में व ढोलकी में बीज रखे जाते थे। इसके अलावा, तूमा (लौकी की एक प्रजाति)बांस के खोल में बीजों का भंडारण किया जाता था। इसी प्रकार बीजों को धूप में सुखा कर या कोठी या भंडारण के स्थान पर धुंआ किया जाता था, जिससे पतंगे या घुन नहीं लगता। कीड़ों से बचाव के लिए लकड़ी या गोबर से जली राख या रेत भी बीजों में मिलाते हैं। बीज के अभाव में बीजों का आदान-प्रदान हुआ करता था। कई बार महिलाएं अपने मायके से ससुराल बीज ले आती थी। खासतौर से सब्जियों के बीज की अदला-बदली रिश्तेदार और परिवारजनों में होना आम बात थी। मायके में खेती के काम सीखकर आने वाली लड़कियों की ससुराल में इज्जत होती थी।

धान रोपाई का काम तो महिलाएं करती हैं। जब वे रंग-बिरंगे कपड़ों में गीत गाते हुए धान रोपाई करती हैं तो देखते ही बनता है। इनमें कई स्कूली लड़कियां भी होती हैं। वे स्कूल में भी पढ़ती हैं और खेतों में भी जमकर काम करती हैं। लड़कियां कृषि में ज्ञान और कौशल सीखती हैं। सतपुड़ा अंचल में धान रोपाई को स्थानीय भाषा में लबोदा कहा जाता है। पहले हर घर में बाड़ी हुआ करती थी, जिसे जैव विविधता का केन्द्र हुआ करती थी। इसमें कई तरह की हरी सब्जियां, मौसमी फल और मोटे अनाज लगाए जाते थे। जैसे भटा, टमाटर, हरी मिर्च, अदरक, भिंडी, सेमी (बल्लर), मक्का, ज्वार आदि होते थे। मुनगा, नींबू, बेर, अमरूद आदि बच्चों के पोषण के स्त्रोत होते थे। इसमें न अलग से पानी देने की जरूरत थी और न खाद की। जो पानी रोजाना इस्तेमाल होता था उससे ही बाड़ी की सब्जियों की सिंचाई हो जाती थी। लेकिन इनमें कई कारणों से कमी आ रही है। ये सभी काम महिलाएं ही करती थीं। न केवल भारत में बल्कि दुनिया के अन्य हिस्सों में महिलाएं खेती व जैव विविधता संरक्षण में संलग्न हैं।

एफए.ओ. (फुड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेषन) की रिपोर्ट के मुताबिक महिलाएं, वैज्ञानिकों के मुकाबले पौध जैव विविधता, फिर वह उगाई जाती हो या प्राकृतिक हो, की अधिक जानकार होती हैं। नाइजीरिया में महिलाएं अपने घरेलू बगीचे में 57 प्रकार की पौध प्रजातियां उगाती हैं। उप सहारा क्षेत्र में महिलाएं 120 विभिन्न पौधे उपजाती हैं। ग्वाटेमाला में दस से अधिक तरह के वृक्ष और फसलें मिल जाती हैं। इसी प्रकार सतपुड़ा अंचल में भी बाड़ियां में कई तरह की सब्जियां और फलदार वृक्ष महिलाएं लगाती हैं।

जंगल क्षेत्र में रहने वाले लोगों की आजीविका जंगल पर ही निर्भर है। खेत और जंगल से उन्हें काफी चीजें अमौद्रिक चीजें मिलती हैं, जो पोषण के लिए नि:शुल्क और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती हैं। ये सभी चीजें उन्हें अपने परिवेष और आसपास से मिल जाती है। जैसे बेर, जामुन, अचार, आंवला, महुआ, मकोई, सीताफल, आम, शहद और कई तरह के फल-फूल, जंगली कंद और पत्ता भाजी सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं। यानी खेती एक तरह की जीवन पद्धति है जिसमें जैव विविधता का संरक्षण होता है। मिट्टी, पानी और पर्यावरण का संरक्षण होता है। और इन सबमें महिलाओं की भूमिका अहम है। पिपरिया के पास डोकरीखेड़ा की महिला किसान कमला बाई कहती हैं कि हमने अपने मायके परासिया में खेती का काम अपने मां-बाप से सीखा था। अब ससुराल में वही कर रही हैं। उन्होंने कहा कि पहले हम मिलवां फसलें बोते थे लेकिन अब उसकी जगह पर एक ही फसल बोने लगे हैं। खेती का अधिकांश काम महिलाएं करती हैं।

देशी बीजों के संरक्षण में लगे बाबूलाल दाहिया कहते हैं कि महिला और पुरुष दोनों खेती के अंग थे। एक दूसरे के पूरक थे। अगर पुरुष खेत में हल चलाता था तो महिलाएं घर से कलेऊ (नाष्ता) लेकर जाती थीं। खेत की जुताई पुरुष करते हैं तो महिलाएं गाय के लिए घास छीलती हैं। अगर फसल आने पर खेत की पूजा होती हैं तो महिलाएं वहां कलश लेकर खड़ी रहती हैं।हाल ही में विदेश से अध्ययन कर लौटे सुरेश कुमार साहू कहते हैं कि आमतौर पर सरकारी आंकड़े खेती में महिलाओं के श्रम बल को कम करके बताते हैं लेकिन वे खेती का अधिकांश काम करती हैं। हमारे देश में गांवों से शहरों की ओर पलायन की जनधारा बह रही है। पुरुष गांव छोड़कर शहरों में काम की तलाश में चले जाते हैं तो खेती के पूरे काम का बोझ महिलाओं पर आ जाता है। यद्यपि वे पहले से भी खेती का काम कर रही होती हैं।

कुल मिलाकर, यह कहा जा सकता है कि कृषि में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। खासतौर पर जंगल और पहाड़ में खेती उन पर ही निर्भर है। नई रासायनिक और आधुनिक खेती में जो अभूतपूर्व संकट आया है उससे जंगल व परंपरागत खेती भी प्रभावित हो रही है। ऐसे में मिट्टी-पानी और देशी बीजों की हल-बैल की परंपरागत खेती को बचाना जरूरी है। और ऐसी परंपरागत खेती को वे ही बचा सकती हैं क्योंकि उनके पास बरसों से संचित परंपरागत ज्ञान, कौशल व अनुभव है।

निजी स्कूलों का मोह और सरकारी स्कूल

मान्यता है कि अंग्रेजी बोलने समझने वाले विद्यार्थी लोग ही सिविल सर्विसेस में जाते हैं। अंग्रेजी स्कूलों का भूत सर चढ़कर बोल रहा है। आज निजी स्कूलों के एक माह की इतनी फ़ीस हो जाती है कि उतने खर्चे में हमने पांचवी तक की पढ़ाई कर ली थी और अच्छे नम्बरों से पास भी हुए थे। अच्छे नम्बर लाने का विद्यार्थी के कोमल मनोमस्तिष्क पर दबाव होता है और इसकी परिणीति कभी कभी जान लेवा भी हो जाती है।

आज देश में शिक्षा को लेकर दो वर्ग स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। पहला वह है जिसे अंग्रेजी स्कूलों में पढ़कर शासन करना है, दूसरा वह है जिसे हिन्दी माध्यम के सरकारी स्कूलों में पढ़कर इन शासकों के आगे फ़र्शी सलाम ठोंकना है। शिक्षा पद्धति ने शासक और शोषित दो वर्ग बना दिए। सरकारी हिन्दी स्कूलों में पढ़ाना लोग अपनी शान के खिलाफ़ समझने लगे हैं। निजी अंग्रेजी स्कूलों में बच्चे को पढ़ाना स्टेट्स सिंबल बन गया है। बस स्कूल के नाम के साथ

24 June, 2012, Daily Chhattisgarh, Raipur